इकाई द्वितीय - समाचार लेखन

डॉ कुलदीपक शुक्ल
सहायक आचार्य
संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

विषयवस्तु रूपरेखा

- उद्देश्य
- समाचार का सामान्य परिचय एवं परिभाषाएं
- समाचार लेखन की अवधारणा
- समाचार लेखक के लिए ध्यातव्य तथ्य
- समाचार की रूपरेखा

उद्देश्य –

- संस्कृत लेखन कौशल का विकास करना।
- समाचार एवं समाचार लेखन से परिचय करना।
- समाचार लेखन कौशल विकसित करना।
- संस्कृत लेखन की आचार शैली विकसित करना।

समाचार एवं लेखन का सामान्य परिचय

आज समाचार समाज के लिए आवश्यक वस्तु बन गया है। प्रातः काल उठने के बाद नित्य नैमित्तिक कार्यों में जैसे शामिल हो गया है। आसपास की, प्रादेशिक या फिर देश-विदेश की जानकारी की अपेक्षा से समाचार अभिन्न वस्तु बन गया है। समाचार के प्रस्तुतीकरण या संचार हेतु तैयार करने के अनेक स्तर होते हैं तब वह हमारे पास तक पत्र के रूप में पत्रिका के रूप में या अनेक टीवी चैनलों पर या रेडियो आदि के माध्यम से पढ़ने, सुनने और देखने को प्राप्त होता है। संस्कृत में भी समाचारों की प्राचीन परंपरा है देवर्षि नारद इस परंपरा के आदि प्रवर्तक माने जाते हैं तदुपरांत महाभारत में संजय तथा अन्य अनेक शास्त्रों में गुप्तचरों द्वारा समाचार प्राप्त करने की व्यवस्था प्राप्त होती है। वर्तमान में संस्कृत समाचार का प्रसारण 30 जून 1974 से प्रातः 9:00 बजे दिल्ली के आकाशवाणी केंद्र से राष्ट्रीय समाचार प्रारंभ हुआ तदुपरांत लोकप्रियता के कारण एक और 5 मिनट का संस्कृत समाचार प्रसारण शाम को6.10 बजे प्रारम्भ हुआ। 21 अगस्त 1994 को दूरदर्शन ने रविवार को साप्ताहिक संस्कृत समाचार प्रसारण का भी श्री गणेश किया तथा कुछ दिनों बाद ही यह साप्ताहिक प्रसारण प्रतिदिन 5 मिनट के लिए कर दिया गया।

समाचार शब्द का निर्माण सम,आ उपसर्ग पूर्वक चर् धातु से घञ् प्रत्यय लगाकर होता है जिसका तात्पर्य है सम्यक आचरण करना या व्यवहार बतलाना। इसी समय का आचरण के आधार पर निष्पक्ष होकर तथ्यों की सटीक सूचना ही समाचार है। अमरकोश में समाचार के पर्याय रूप में वार्ता, वृत्त, प्रवृत्ति तथा उदन्त शब्द प्राप्त होते हैं। हिंदी में सूचना, खबर, संवाद, हाल-चाल, वृतान्त, नई सूचना, शिष्टाचार, आचरण या व्यवहार, रीति, प्रथा, आगे बढ़ना तथा गति आदि पर्याय प्राप्त होते हैं। अंग्रेजी में इस न्यूज़ नाम दिया गया है और दिशाओं से जोड़कर व्याख्यात किया गया है। संस्कृत में प्रकाशित होने वाले समाचार को वार्ता कहते हैं जो एक लम्बे समय से भारत ही नहीं अपितु विदेश में भी"सम्प्रति वार्ता श्रूयन्ताम"। समाचार को अनेक तरीकों से पाठको,दर्शकों तथा श्रोताओं तक पहुंचाया जाता है। जैसे- मुद्रण, प्रसारण, इंटरनेट, मौखिक, डाक प्रणाली, एवं इलेक्ट्रॉनिक संचार दूसरे तरीके से कहें तो समाचार संकलन, लेखन, सम्पादन, वाचन आदि। इनमें से मुद्रण समाचार लेखन कहलाता है। समाचार लेखन पर हमें यहां चर्चा करनी है। समाचार कैसे लिखा जाए कि वह सुनने या पढ़ने मे प्रभावी और पाठक, श्रोता की जिज्ञासा को बढ़ाता रहे। आज की भाषा में समाचार मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं - **हार्ड समाचार** - इसे ही ब्रेकिंग न्यूज़ भी कहते हैं इसमें अति महत्वपूर्ण या तात्कालिक घटनाओं का प्रसारण होता है जैसे चुनाव की घोषणा-परिणाम, अपराधिक घटना, दुर्घटना, सरकार बनना -गिरना, बजट, कुलपति बनना -हटना, प्रशासनिक तबादले, नियुक्तियां, यौनशोषण, चोरी, महान-सम्मानित व्यक्ति पर आरोप या पारिवारिक मामले या उनकी मौत, सीबीआ,विजिलेंस के छापे आदि।

सॉफ्ट समाचार - इन समाचारों में अनोखी एवं आश्चर्यजनक, अजीबोगरीब घटनाओं पर विवरण दिया जाता है। जैसे - संवाददाता द्वारा तैयार की गई कहानी, घोटाले का पर्दा फास, चुनाव मैदान के प्रत्याशियों के लिए मतदाताओं की राय, पुस्तक का विमोचन, सेमिनार, कार्यशाला, दिनचर्या, फैशन अन्य मुद्दों पर लोगों की प्रतिक्रियाएं, फॉलोअप स्टोरी आदि।

फॉलोअप न्यूज- इसमें कुछ वो घटनाएं जो निरन्तर आगे बढ़ती रहती हैं और लम्बी चलती है, जिनमें कुछ न कुछ नई बातें सामने आती रहती हैं यह किसी समाचार पत्र या न्यूज़ चैनल या रेडियो के लिए महत्वपूर्ण होती है।

परिभाषाएं - समाचार लेखन में यह समझना अति आवश्यक है कि कौन खबर या सूचना समाचार बनने के योग्य है ? क्योंकि प्रत्येक खबर या सूचना समाचार नहीं होती। इसलिए स्पष्टीकरण हेतु विद्वानों द्वारा दी गई समाचार की परिभाषाएं इस प्रकार हैं –

मेल्विन मैंचर के अनुसार – वह घटनाएं, क्रियाएं या वक्तव्य जो हमें सोचने पर मजबूर करते हैं या संशय में डालते हैं समाचार कहलाते हैं।

- चार्ल्स ए दाना के अनुसार – समाचार वह कोई भी चीज है, जिसके बारे में लोग चर्चा करते हैं।
- गेराल्ड जॉनसन के अनुसार - किसी मंझे हुए समाचार कर्मी को रुचिकर लगने वाली चीज समाचार है।
- रॉबर्ट डार्टन के अनुसार - पत्रकार इतिहासकार की भांति होते हैं वह जन्म से लेकर मृत्यु तक की सभी मानवीय स्थिति व संबंधित घटनाओं में नाटकीय व रोचक पहलुओं को समाचार के रूप में प्रस्तुत करते हैं।
- केपी नारायण के अनुसार - समाचार किसी सामयिक घटना का, महत्वपूर्ण तथ्यों का परिशुद्ध तथा निष्पक्ष विवरण होता ह, जिससे उस समाचार पत्र में पाठकों की रुचि होती है जो इस विवरण को प्रकाशित करता है।
- जे जे सिडलर के अनुसार – पर्याप्त संख्या में मनुष्य जिसे जानना चाहे वह समाचार है शर्त यह है कि वह सुरुचि तथा प्रतिष्ठा के नियमों का उल्लंघन न करें।

इन परिभाषाओं के अतिरिक्त यह भी समझना होगा की समाचार का ज्ञान पाठक को स्पन्दित एवं रोमांचित करने वाला हो, संतुष्ट करने वाला हो, मनोरंजन, नवीन तथा महत्वपूर्ण भी हो। रामचंद्र वर्मा ने लिखा है कि समाचार का अर्थ आगे बढ़ना चलना, अच्छा आचरण या व्यवहार करना है। मध्य और परवर्ती काल में किसी कार्य व्यवहार की सूचना को समाचार मानते हैं। ऐसी ताजा या हाल की घटना की सूचना इसके सम्बन्ध में पहले लोगों को जानकारी ही न हो।

लेखन

समाचार लेखन सामान्य लेखन से एक भिन्न कौशल है जिसमें समाचार के उन समस्त गुणों का समावेश इस प्रकार किया जाता है कि पाठक की जिज्ञासा शान्त हो सके। नीरस तथ्यों को भी समाचार लेखक इस प्रकार लिखता है कि उनमें संवेदनात्मक और भावनात्मक गुण सम्मिलित हो सके। नंदकिशोर त्रिखा लिखते हैं कि - समाचार लेखन न तो निबंध लेखन है न पुस्तक लेखन की कला के समान है और न ही सामान्य डाक पत्रों की तरह है इसकी अपनी कला है। समाचार लेखन के द्वारा अनेक घटनाओं, सूचनाओं एवं खबरों का चित्रण किया जाता है। अतः लेखनी पर लेखक का अधिकार होना अनिवार्यता आवश्यक है। घटना को देखकर, सुनकर उसे अपने अनुभव से लिपिबद्ध करना तथा समाज तक उसकी सजीवता, रोचकता, स्पष्टता,सरलता और प्रामाणिक सत्यता पहुंचाना ही लेखक का कौशल है। यह कौशल व्यक्ति जन्मजात प्राप्त नहीं करता। इसे मनुष्य अपने व्यक्तित्व में विकसित कर सकता है तथा इस कौशल को विकसित करने के लिए साधना की आवश्यकता होती है। पुस्तक वार्ता पत्रिका के चतुर्थ अंक (मार्च-अप्रैल 2002)के पृष्ठ 6 पर वागीश शुक्ल जी ने लिखा है कि पढ़ना एक ऋण का स्वीकार्य है और लिखना उसे ऋण की आदायगी, लिखना कृतज्ञता की अभिव्यक्ति है। लेखक की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है।

समाचार लेखक के लिए ध्यातव्य तथ्य

समाचार लेखक को समाचार लेखन में मुख्य रूप से अपना ध्यान इन कुछ मुख्य बिन्दुओं पर केंद्रित करना चाहिए –

- घटना का महत्व और प्रभाव।
- समग्र तथ्यों का संकलन में सप्तककारों का आवश्यक प्रयोग।
- तथ्यों का विश्लेषण (प्रासंगिकता प्रमाणिकता)।
- रूपरेखा।
- अप्रचलित शब्दावली से परहेज।
- समाचार की भाषा।

समाचार लेखन के प्रकार

प्रारम्भ से ही समाचार लेखन की तकनीकी सुनिश्चित है। जिसे अपनाकर लेखक उत्कृष्ट कौशल प्राप्त कर सकता है। यह समाचार लेखन कौशल दो प्रकार का है –

1 स्तूपी समाचार

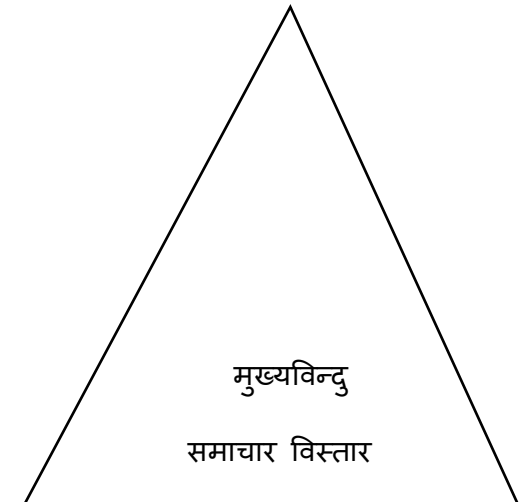

2 विलोम स्तूपी समाचार।

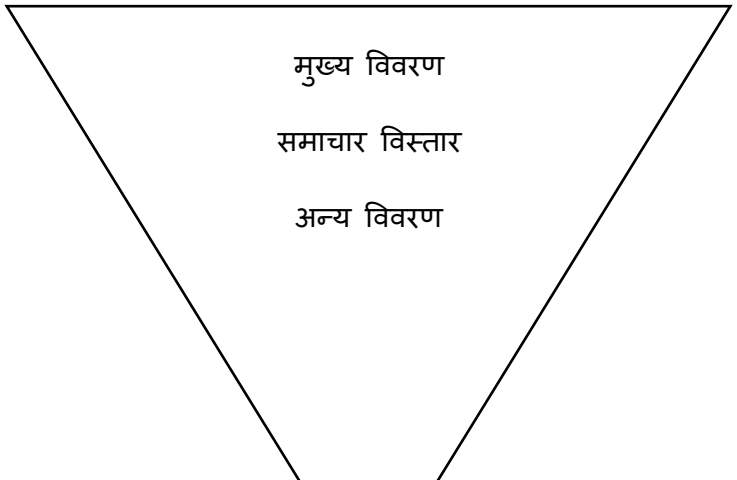

समाचार लेखन समाचार पत्र एजेंसी के लिए, रेडियो समाचार के लिए, टीवी के लिए तथा अन्य अनेक समाचार माध्यमों के लिए भी किया जाता है। जिसमें विश्व के समस्त क्षेत्र राजनीतिक शिक्षा स्वास्थ्य व्यापार आदि आते हैं। समाचार के यह माध्यम दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक,वार्षिक तथा कुछ अनियतकालीन समाचार पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित हो रहे हैं।

समाचार लेखन की रूपरेखा

किसी भी समाचार की अपेक्षित जानकारी प्राप्त करने के उपरान्त उसके लेखन की रूपरेखा का ज्ञान आवश्यक होता है। इन दो स्तूपी और विलोम स्तूपी संरचना के अतिरिक्त लेखक अपने कौशल का विस्तार दिखाने हेतु लेखन में परिवर्तन भी कर सकता है। क्रमशः शीर्षक, सूत्रोल्लेख, भूमिका, तथ्यों का विस्तार तथा प्रभावशाली समापन बिंदुओं के आधार पर समाचार की रूपरेखा तैयार कर सकता है।

शीर्षक – समाचार लेखन का कार्य पूर्ण करने के बाद अंत में शीर्षक बनाया जाता है शीर्षक ही समाचार का आकर्षण होता है शीर्षक प्रभावित होने से वह पाठक को श्रोता को दर्शन को आकर्षित करता है अतः शीर्षक बनाते समय लेखक को कुछ महत्वपूर्ण बातें ध्यान रखनी चाहिए जो अधोलिखित है –

- शीर्षक छोटा परंतु पूर्ण हो समाचार सामग्री के आकार स्वरूप के अनुरूप हो।
- शीर्षक जिज्ञासा उत्पन्न करने वाला।
- शीर्षक में ही समाचार की विषय वस्तु का मूल भाव स्पष्ट होना आवश्यक है।
- शीर्षक सामान्य एवं सीधे रूप में हो उसमें विशेषण या अनेक अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग न हो।
- शीर्षक, सरल, स्पष्ट, आकर्षक, रोचक तथा समाचार को सार्थक करने वाला हो।

जैसे –

- ट्रम्पः पुनः अमेरिका देशस्य राष्ट्रपतिः।
- झारखण्डराज्ये महिलाभिःसह भेदभावः ।
- यात्राधाम द्वारकायाः समुद्रतटस्य विकासः करणीयः।
- गोरक्षपुर विश्वविद्यालये शताब्दि महोत्सवस्य आरम्भ:।

सूत्रोल्लेख - शीर्षक के बाद समाचार के सूत्र अर्थात स्त्रोत का उल्लेख करना भी एक कौशल है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि समाचार किसके द्वारा? कहां से?कब प्राप्त हुआ है ? यथा –

स्वर्गीया डॉ शारदा सिन्हायै भारतरत्नामान: प्रदीयतेति

वार्ता प्रेषकः राघवनाथ झाः, पटना

भूमिका - समाचार का आरम्भ भूमिका के रूप में होता है इसे आमुख भी कहा जाता है। इसे पढ़कर ही पाठक समाचार के मूल भाव को समझ पाता है। भूमिका ऐसी होनी चाहिए जिससे पाठक उस समाचार को अंत तक पढ़ने को बाध्य हो उठे। भूमिका में आकर्षण का गुण उसे प्रभावशाली बनाता है। विविध विषयक समाचारों के लिए अलग-अलग तरह से समाचार का आरम्भ किया जा सकता है। कहीं किसी कवि या प्रसिद्ध व्यक्ति की उक्ति से, कहीं प्रश्न शैली में, कहीं भावात्मक तरीके से, कहीं सीधे-सीधे सपाट शैली में - लेकिन प्रयास यह किया जाना चाहिए कि भूमिका में छह ककारों का उत्तर पाठक को मिल सके। यदि यह सम्भव न भी हो तो कम-से-कम क्या, कहाँ और कब जैसे प्रश्नों के उत्तर तो अवश्य मिल जाने चाहिएं। कई बार प्रश्न शैली या उक्ति शैली से समाचार का आरम्भ किया जाता है तो ऐसी भूमिकाओं मे सप्त ककारों में से किसी का उत्तर प्राप्त नहीं होता। ऐसी भूमिकाएं पाठक पर एक अलग प्रभाव छोड़ती हैं। अभिप्राय यह है कि भूमिका ऐसी हो जो पाठक को समाचार पढ़ने के लिए पूरी तरह से बाध्य कर दे।

तथ्यों का विस्तार - समाचार की भूमिका या आमुख लिख लेने के बाद शेष समाचार की रचना की जाती है। यह एक तरह से समाचार का शरीर होता है। इस भाग में घटना के तथ्यों को पूर्णतः विस्तार से प्रस्तुत किया जाता है। सभी तथ्य इस प्रकार आने चाहिएं कि घटना को कथा के रूप में पूरी तरह स्पष्ट कर दें। घटना के सभी तथ्यों को धीरे-धीरे स्पष्ट करते हुए समाचार-लेखक उसकी प्रामाणिकता को भी सिद्ध करता चलता है। अपेक्षित स्थान पर तथ्यों के प्राप्ति के सूत्र के विषय में भी बताता चलता है जिससे उसकी सत्यता पर प्रश्न न उठाया जा सके। तथ्यों के विस्तार में सभी छह ककारों के उत्तर पाठक को मिल जाने चाहिएं। इस भाग से पाठक को मानसिक संतुष्टि मिल पाती है। विस्तार के समय ऐसा प्रतीत न हो कि समाचार की कहीं पुनरावृत्ति हो रही है। आवश्यकता पड़ने पर समाचार लेखक विस्तार को अनुच्छेदों में बाँट सकता है।

प्रभावशाली समापन समाचार की समाप्ति के उपरान्त अंत में समाचार का समापन संक्षेपण के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। समाचार का अंतिम भाग होने के बावजूद इसका प्रभाव क्षीण नहीं होना चाहिए। जैसे किसी कहानी के अंत में पाठक को संतुष्टि मिलती है उसी तरह से समाचार के अंत के बाद किसी भी प्रश्न की सम्भावना पाठक के लिए नहीं बनी रहनी चाहिए। समाचार-लेखक चाहे तो अंत में अपनी ओर से कोई राय या सम्मति भी दे सकता है। लेकिन उसे यह ध्यान रखना चाहिए कि वह अभिमत समाचार पर थोपा हुआ प्रतीत न हो।

साक्षात अनुभव के लिए कुछ समाचार पत्र वह टीवी और रेडियो पर प्रसारित होने वाले संस्कृत समाचार कार्यक्रमों को देखा जा सकता है। यहां पर उदाहरण के रूप में एक विश्वस्य .वृतांतम समाचार पत्र का एक पृष्ठ दृष्ट्व्य है -

विश्वस्य वृत्तान्तः

अथ वैदिकपञ्चाङ्गम्

07 नवम्बर 2024, गुरूवासरः

सृष्टि संवत्	1,96,08,53,125	विक्रमसम्वत्	2081
सम्वत्सरः	शोभकृत	अयनः	सायनसूर्यः दक्षिणायनः
गोलः	उत्तरगोलः	ऋतुः	शरद
मासः	मास अमांत पूर्णिमांत च कार्तिक		
पक्षः	शुक्ल	तिथिः	षष्ठी
नक्षत्रम्	पूर्वाषाढ़ा		
चन्द्रराशिः	धनु	योगः	धृति
करणम्	कौलव, तैतिल		

॥ पञ्चाङ्गमद्यतनीयमेतत् भूयात् सर्वेभ्यः शुभम् ॥

दैनिकं संस्कृतवार्तापत्रम्
विश्वस्य वृत्तान्तः

संपादक मण्डल

- श्रीमान् शिवराजझा 'शान्तेयः' - प्रधान सम्पादकः
- श्रीमान् मुर्तजा खंभातवाला - प्रबन्ध सम्पादकः, प्रकाशक
- श्रीमान् शिवओम मिश्रा - सह-सम्पादकः
- श्रीमान् साजिद इलेक्ट्रीकवाला- सह-सम्पादकः

मार्गदर्शकः

- प.पू. स्वामी ब्रह्ममुनिजी गुरुश्री भरतमुनीश्री - (गुजरात)
- संस्कृति फाउन्डेशन ट्रस्ट (TRUST Reg. No. F/2740/SURAT) (SOCIETY Reg. No. GUJ/2646/SURAT)

परामर्शकाः

- श्रीमान् सुधिष्ठकुमारमिश्रः - नवदेहली
- श्रीमान् गवीशः द्विवेदी - नवदेहली
- श्रीमान् डॉ. रविन्द्रकुमारपाण्डा - बड़ौदा
- श्रीमान् डॉ. नरेन्द्रपाण्डेयः - मेरठम्
- श्रीमान् डॉ. गौरवनायकः - लक्ष्मणपुरम्
- श्रीमान् योगेशभोपे - इन्दौरम्
- श्रीमान् डॉ. रत्नेश्वरमणित्रिपाठी - लक्ष्मणपुरम्
- श्रीमान् धीराजमैठाणी - उत्तराखण्डः

स्तम्भकाराः

- श्रीमान् डॉ. बलदेवानन्द सागरः - नवदेहली
- श्रीमान् डॉ. धनंजय भंजः - गुजरात (विशेष वार्ताः)
- श्रीमान् अनिल शर्मा - नवदेहली
- श्रीमान् सत्यप्रकाश त्रिपाठी (ज्योतिषाचार्य)
- श्रीमति सुजाता रमेश - बैंगलुरु (कर्णाटक)
- श्रीमान् डॉ. मधुसुदन व्यास - मोडासा (गुजरात)
- श्रीमान् साध्वी विवेका भारती - नवदिल्ली (प्रकिर्ण)
- श्रीमान् वत्सदेशराजशर्मा - हिमाचलप्रदेशः

प्रभारी

- श्रीमान् संदीप राजपूत - सूरत महानगर
- श्रीमान् विनोद मोहोड - द. गुजरात
- श्रीमान् अंशुगुप्तः - उत्तरप्रदेशः
- श्रीमान् राघवनाथ झा - पटना (बिहार)
- श्रीमान् कुणाल कौशिक - मोतिहारी (बिहार)
- श्रीमान् महेश तिवारी - उत्तराखण्ड
- श्रीमति रागा सुधा विजनमुरी - लंदन (युके)
- श्रीमान् अड्कन दास - पश्चिमबङ्गाल

संपर्क कार्यालय (सूरत)
विश्वस्य वृत्तान्तः
Vishvasya Vrutantah
(Sanskrit Daily Newspaper)
दूसरा माला, IDBI एटीएम के उपर,
विमल गार्मेन्ट के सामने,
उडुपी रेस्टोरेन्ट के पास, उधना तीन रास्ता, उधना,
सूरत-394210. (गुजरात)
मो. 87804 34516, 98259 18190

महर्षिमहेशयोगीवैदिकविश्वविद्यालये एकदिवसीया योगसङ्गोष्ठी सञ्जाता

वार्ताप्रेषकः - डॉ आलोकः

कटनी। महर्षि महेशयोगी-वैदिक विश्वविद्यालये वेद-विज्ञान-सङ्कायान्तर्गत-योगविभागद्वारा आयुर्वेदेन योगेन च स्वास्थ्यसंरक्षणार्थं एकदिवसीया अखिल-भारतीया योग-संगोष्ठी समायोजिता। यत्र विशिष्य अर्शरोगसन्दर्भे आयुर्वेदस्य योगस्य वा महत्ता प्रतिपादिता।

कार्यक्रमस्यास्य संरक्षकाः विश्व-विद्यालयस्य कुलगुरवः सम्माननीयाः प्रो. प्रमोदकुमारवर्मावर्याः, संयोजकत्वेन योगविभागस्य विभागाध्यक्षः डॉ नित्यैश्वर-चतुर्वेदीमहोदयः, सह-संयोजकत्वेन डॉ श्यामबाबूखरे-महाशयः, श्रीमान् दीपकपाण्डे-महाशयश्च आसन्।

कार्यक्रमस्य आरम्भे ध्यान एवं सिद्धिशिक्षकौ श्रीमान् जी.के चौधरीमहाशयः श्रीमान् स्वतन्त्र-द्विवेदी-महाशयश्च गुरुपरम्परापूजनं कारितवन्तौ। तदनु वेदविभागीयच्छात्राः वैदिकमङ्गलाचरणं कृतवन्तः।

ज्योतिष विभागस्य विभागाध्यक्षाः प्रो. मानवेन्द्र पाण्डेयवर्याः कार्यक्रमस्य अध्यक्षत्वेन समवेताः आसन्। प्रबन्धन-विभागस्य सहप्राध्यापकाः डॉ शशांक-त्रिपाठीवर्याः, अकादमिक-समन्वयकः डॉ पङ्कजकुमारमिश्रवर्यः, वेदविभागस्य विभागाध्यक्षाः डॉ आलोक-चन्द्र-परिडावर्याः च मञ्चासीनाः आसन्।

ततः कार्यक्रमे अस्मिन् योगविषयम् उररीकृत्य प्रो. सुरेन्द्र त्यागीवर्याः (गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालयः, हरिद्वारम्) स्वास्थ्यसंरक्षणाय शास्त्रमर्मज्ञान-अभ्यास-अनुभवेन च नैकानि उदाहरणानि प्रदाय स्वीयोद्बोधनं प्रबोधितवन्तः। क्रमशः आयुर्वेदस्य वक्तृत्वेन डॉ रामकरण सैनीमहाभागाः (आयुष मन्त्रालयः, राजस्थानम्) अर्शरोगस्य प्रकाराः, कारणानि, लक्षणानि, आयुर्वेदगततदुपशमोपायाः पी.पी.टी माध्यमेन सविस्तृतं बोधयन् उपस्थितसर्वेभ्यः विशिष्य छात्रेभ्यः स्वास्थ्यसंरक्षणाय सम्प्रेरितवन्तः।

तत्पश्चात् ज्योतिषविभागस्य विभागाध्यक्षाः प्रो. मानवेन्द्र पाण्डेयवर्याः आध्यक्षीयभाषणम् अकुर्वन्। तदनन्तरं डॉ श्यामबाबूखरेमहाभागाः सर्वेभ्यः धन्यवादार्पणं कृतवन्तः। कार्यक्रमस्य सञ्चालनं सुचरूताया डॉ नित्यैश्वरचतुर्वेदीवर्येण कृतम्। कार्यक्रमेऽस्मिन् विश्वविद्यालयस्य भिन्नभिन्नविभागस्य विभागाध्यक्षाः, प्राध्यापकाः, सहप्राध्यापकाः, सहायकप्राध्यापकाः, अतिथिशिक्षकाः, शैक्षणिकाशैक्षणिककर्मचारिणः, छात्राश्च सर्वे सम्मिल्य अखिलभारतीयाम् एकदिवसीयासङ्गोष्ठीम् इमां सफलीकृतवन्तः इति शम्।

आसामराज्ये तिनिचुकीयायां भाषागौरवसप्ताहस्य पालनम्

वार्ताप्रेषकः डः जुमली नाथः

तिनिचुकीया,आसाम्। आसामराज्ये तिनिचुकीयायां विमेनज कलेज, तिनिचुकीया इत्याख्ये महाविद्यालये नवम्बर मासस्य तृतीयदिनांकतः भाषा-गौरव-सप्ताहः इति नाम्ना विविधाः कार्यक्रमाः प्रचलन्ति। तेषु कार्यक्रमेषु मुख्यकार्यक्रमरूपेण संस्कृतभाषया देशस्य माननीयप्रधानमन्त्रिणं नरेन्द्रमोदिनं प्रति पत्रं लिखितवन्तः।

केन्द्रीयसर्वकारेण ध्रुपदीभाषात्वेन घोषितभाषासु संस्कृतभाषया सार्कं असमीया , बेङ्गली इत्यादीनां भाषाणामपि स्थानम् आगतम् इति गौरवं अनुभूय एषः कार्यक्रमः पालितः भवति। अस्य महाविद्यालयस्य संस्कृतविभागस्य आयोजनेन तथा च अत्रैव स्थितस्य संस्कृताध्ययन केन्द्रस्य सहयोगेन आयोजिते

कार्यक्रमेऽस्मिन् सर्वे अपि शिक्षार्थिनः पत्रं लिखित्वा देशस्य माननीयप्रधानमन्त्रिणं प्रति सश्रद्धं प्रेषितवन्तः।

शिक्षार्थिनां भाषा शुद्धा भवेत्, शुद्धं पदं व्यवहृत्य सर्वेषां लेखनं कथनं च भवेत् इति विचार्य संस्कृतशब्दानां श्रुतलेखस्पर्धा अपि आयोजिता। आसां स्पर्धानां सञ्चालनाय सहयोगं कृतवान् संस्कृतभाषाशिक्षकः श्री अनन्तः चेतिया।

महाविद्यालयस्य संस्कृतविभागस्य प्रधानाध्यापिका डः जुमली नाथः कार्यक्रमे भागग्रहीतृभ्यः सर्वेभ्यः शिक्षार्थिभ्यः सहयोगं कुर्वद्भ्यः अध्यापकेभ्यः च कार्तज्ञवचोभिः प्राशंसत्। हिन्दीभाषा-अध्यापिका थेचो क्रपि, रागिनी मल्लिकः , देवीलाल शर्मा इत्येते अपि अस्मिन् कार्यक्रमे उपस्थिताः सन्तः सहयोगं कृतवन्तः।

कृषि विभागस्य पहलस्य प्रभावः दृष्टगोचरः

पूर्णियायाः कृषकाः स्वीट् कर्णं, बेबी कर्णं च कृषिं स्वीकृतवन्तः

(वार्ताप्रेषकः राघवनाथझाः)

पटना। कृषि सचिवः श्रीमान् संजयः कुमारः अग्रवालः अवदत् यत् खरिफ् ऋतौ कृषि विभागेन चयनितेषु जनपदेषु स्वीट् कर्णं बेबी कर्णं च कृषिं प्रोत्साहयितुं योजनायाः आरम्भः कृतः। स्वीट् कर्णं बेबी कर्णं च उत्तमं मूल्यं लभ्यमानं कृषकाणां उत्साहं वर्धयति, तेन ते परम्परागतस्य धान्यस्य स्थाने अधिकविपणि-आकर्षणीयस्य धान्यस्य कृषिं स्वीकुर्वन्ति। श्री अग्रवालः अवदत् यत् पूर्णियायाः विभिन्नेषु प्रखण्डेषु ५० हेक्टेयरतः अधिके क्षेत्रे कृषकैः स्वीट् कर्णं बेबी कर्णं च कृषितं। धमदाहा अनुमण्डलस्य पञ्चसु ग्रामपञ्चायतेषु कृषकाः स्वीट् कर्णं बेबी कर्णं च स्थानीये विपणौ, होटलेषु च विक्रीतम्। तस्य लाभं च प्राप्तवन्तः। नालन्दायां हरनौते अनन्तजीत् फूड् प्राइवेट् लिमिटेड् अपि एतेन लाभितमस्ति।

कृषि सचिवः अवदत् यत् स्वीट् कर्णं बेबी कर्णं च द्वौ मासौ मध्ये सञ्चिन्तं शक्यते। एकस्मिन् हेक्टेयर् मध्ये स्वीट् कर्णं बेबी कर्णं च प्रायः १८-२० क्विण्टल् परिमाणे फलं लभते। स्थानीये विपणौ किलोग्रमे शतेन विक्रीयते, जनपदात् बहिः विक्रये किंचित् न्यूनं मूल्यं कृषकैः प्राप्यते - ८० रूप्यकाणि प्रति किलोग्रमे।

पथराहा ग्रामपञ्चायते श्री चन्दनः कुमारः मण्डलः, श्रीमत्याः फुलकुमारीदेव्याः च कर्णस्य कृषिकर्मणः दृष्ट्या लक्ष्मीपुरस्य कृषकः श्री मण्टू यादवः तथा अन्ये कृषकाः अपि बेबी कर्णस्य कृषिं कृत्वा प्रेरिताः सन्ति। कृषि विभागेन कृषकेभ्यः ५० प्रतिशत् अनुदानेन स्वीट् कर्णं बेबी कर्णं च बीजं उपलब्धं क्रियते। स्वीट् कर्णस्य बेबी कर्णस्य च सञ्चिन्तनानन्तरं तस्य पौष्टिकवृक्षेषु अवशेषः पशूनां पोषणाय उपयुक्तः भवति, तेन कृषकाः पशुपालकाः अपि लाभं प्राप्नुवन्ति।

कृषि सचिवः अवदत् यत् अस्मिन रबि ऋतौ पञ्चदश जनपदातिरिक्तेऽपि स्वीट् कर्णं बेबी कर्णं च कृष्यर्थं योजना स्वीकृता अस्ति। अस्य कृते कृषकेभ्यः ५०% अनुदानेन बीजं तथैव आवश्यकम् उपादानं च लभ्यते, येन अल्पव्ययेन अधिकलाभं कृषकैः प्राप्तुं शक्यते।

नवनिर्वाचितविधायकस्य अकालनिधनम्

(विश्वस्य वृत्तान्तः)

श्रीनगरम्। जम्मू काश्मीरविधानसभायां नवनिर्वाचितः भाजपाविधायकः देवेन्द्रसिंह राणा इत्यस्य हृदाघातेन निधनेन प्रधानमन्त्री, कांग्रेसनेता राहुल गान्धी, मुख्यमन्त्री उमर अब्दुल्लावत् सर्वदलीयनेतारः अन्तिमदर्शनं कृतवन्तः। केवलं 59 वर्षवयसि निधनप्राप्तस्य विधायकस्याग्रः जितेन्द्रसिंहः केन्द्रसर्वकारस्य कैबिनेटमन्त्री। श्मशानपीठे उमर अब्दुल्ला, फारुक अब्दुल्ला, महेबुबा मुफ्तिवत् नेतृणां समागमनं बभूव। प्रधानमन्त्री उक्तवान् यत्

प्रदेशे भाजपासंगठनस्य सशक्तिकरणे राणा गुरुत्वपूर्णभूमिकायाम् अवतीर्णः आसीत्। एनसी संगठनस्य दीर्घकालस्य सम्बन्धं परित्यज्य गतवर्षे सः भाजपाशरणे निर्गतः। उपमुख्यमन्त्री सुरीन्दर चौधरी च शास्त्रीयनगरस्मशानगृहं गत्वा अन्तिमदर्शनं कृतवान्।

क्षुद्रदलानां समर्थनं विना सर्वकारनिर्माणं कठिनम्

(विश्वस्य वृत्तान्तः)

मुम्बई। अखिल भारतीयमुस्लिमलीग-राज्यप्रमुखः इम्तियाज जलील अकथयत् यत् महाराष्ट्रराज्ये प्रथमवारं मतविभाजनस्य कारणत्वात् कस्यापि एककदलस्य पूर्णसंख्यात्मकः सर्वकारः

न भवेत्। महाविकासाघाडीवत् महायुतिशासकदलस्य च असन्तुष्टाः नेतारः निर्दलीयाः प्रार्थिनः भवन्ति। एतेषु 40 प्रतिशतं विजयं च लप्स्यते अतः शासकदलाय क्षुद्रदलानां समर्थनं नितान्तम् काम्यम्। मुस्लिमलीग पक्षतः 16 आसनोपरि प्रार्थिनां कृते प्रचारयोजनाकाले जलीलः अकथयत् यत्क क्षुद्रसंगठनानां पूर्णविश्वासः वर्तते। सप्तविधायकाः एव विजित्य शासकदलमध्ये आगमिष्यन्ति। राज्ये प्रथमवारं महाराष्ट्रनवनिर्माण सेनायाः आधिपत्यं न्यूनं मन्यते। जोरांग पाटीलवत् कार्यकर्त्तारः च मौनत्वं प्रकटयन्ति। मराठा-आरक्षणम् प्रकरणं न केनापि विचार्यते।